SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-01, September- 2024
www.shikshasamvad.com

युवा वर्ग के छात्रों के सामाजिक समायोजन में मातृभाषा हिन्दी का योगदान

महिमा
शोधार्थिनी
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, (उ0प्र0)

डॉ0 नवनीता भाटिया
एसोसिएट प्रोफेसर
शोध पर्यवेक्षिका
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, (उ0प्र0)

सारांश :–

समायोजन के द्वारा एक और तो हम अपने आपको बदलती परिस्थितियों के अनुसार बदलने का प्रयान करते है, तो दूसरी ओर समायोजन हमे ऐसी शक्ति और सामर्थ्य भी देता है कि हम परिस्थितियों को ही बदल डालें। बात सन्तुलन की होती है और यह सन्तुलन हमें अपनी परिस्थितियों के बीच बनाना होता है। अतः इसके लिए जहाँ अपने को बदलकर सन्तुलन बनाया जा सकता है अर्थात् दूसरे शब्दों में हालातों से समझौता किया जा सकता है, वहीं ऐसा साहस भी किया जा सकता है कि परिस्थितियों को ही बदलकर अपने अनुकूल या इचम के अनुसार कर लिया जाये। समायोजन का यह दूसरा रास्ता महापुरुषों, साहसी तथा निडर व्यक्तियों तथा इतिहास रचने वाले व्यक्तियों द्वारा चुना जाता है और वे अपनी परिस्थितियों के सामने हार न मानकर उन्हें झुकाते चलते है और इस तरह अपनी सफलता की मजिल पर पहुँचकर दिखाते है।

महत्वपूर्ण शब्द :– *समायोजन, सन्तुलन, किशोरों के आक्रामक व्यवहार, आदि।*

इन्द्र तनाव एवं संघर्ष शब्द का प्रयोग हम दिन–प्रतिदिन की जिन्दगी में कई रूपों में करते है। किन्हीं दो या दो से अधिक मतावलम्वियी, संस्कृतियां, धर्मों तथा संगठनों में हमें प्रायः विभिन्न प्रकार के वैचारिक और सामाजिक संघर्ष देखने को मिल सकते है। परिवार और समाज में भी पति–पत्नी बाप–बेटा, भाई–बहन तथा गुरु और शिष्यों के बीच तनाव एवं संघर्ष की अनेक परिस्थितियों पैदा हो सकती है। एक समुदाय के साथ दूसरे समुदाय का, एक जाति के साथ दूसरी जातियों का, एक प्रान्त के साथ दूसरे प्रान्तों का, एक देश के साथ दूसरे देशों का आपसी तनाव एव संघर्ष होना भी एक सामान्य–सी बात ही है। इस प्रकार की प्रत्यक्ष तौर पर बाह्य रूप

से दिखाई देने वाले तनावी एवं संघर्ष के अतिरिक्त कुछ ऐसे तनाव एवं संघर्ष भी होते है जिन्हें विद्यार्थी विशेष आन्तरिक रूप से झेलते है। अपने मन में चल रहे इन संघर्षों का जिन्हें तनावों की संज्ञा दी जाती है, विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य और वैयक्तिक एवं सामाजिक समायोजन से बहुत अधिक नजदीकी रिश्ता होता है और इस दृष्टि से इनका समुचित सन्तुलन एवं नियन्त्रण उसके विकास और प्रगति की दृष्टि से बहुत आवश्यक होता है।

एक विद्यार्थी तभी तक सन्तुष्ट और दूसरे शब्दों में अपने आपको समायोजित अनुभव करता है जिस सीमा तक उसकी मूलभूत आवश्यकताओं तथा इच्छाओं की संतृप्ति होती रहती है या ऐसा होने की आशा बँधी रहती है। इस संतृप्ति में बाधा आने या आशा टूट जाने पर विद्यार्थी समायोजित नहीं रह पाता तथा यह अनेक प्रकार की कुंठाओ, आन्तरिक संघर्षों एवं तनावों का शिकार हो जाता है। इस रूप में सन्तुष्ट एवं सुखी रहने की कुंजी समायोजन की प्रक्रिया के हाथों में है और समायोजन की यह प्रक्रिया विद्यार्थी और उसकी परिस्थितियों के बीच झूलती रहती है। कभी विद्यार्थी की योग्यतायें, क्षमतायें तथा उससे मिलने वाला परामर्श या सहायता परिस्थितियों पर हावी हो जाते है, तो कभी परिस्थितियों के सामने घुटने भी टेकने पड़ते हैं। समायोजन ऐसी ही प्रक्रिया एवं समायोजन का अभाव है, जो विद्यार्थी को उसकी अपनी योग्यता और क्षमताओं के सन्दर्भ में उसकी अपनी परिस्थितियों के अनुसार उसे आगे प्रगति के मार्ग पर ले जाने में सहायता करती है और जहाँ पर भी उसके मार्ग में रुकावट या बाधा उत्पन्न होती है. विद्यार्थी तनावग्रस्त हो जाता है। विद्यार्थी के जीवन में यह प्रक्रिया कमी रुकने का नाम नहीं लेती, क्योंकि जीवन कभी रुकता नहीं है और परिस्थितियों के साथ–साथ ही समायोजन की प्रक्रिया को भी बदलते रहमा पड़ता है। इसी बदलाव और अनुकूलन क्षमता में भी विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास उसकी प्रगति, सन्तुष्टि तथा खुशी का दारोमदार होता है।

विद्यार्थी अपने आप से, अपने समाज एवं विद्यालय से कितना समायोजित है. इस बात का निर्णय उसके इन क्षेत्रों के समायोजन स्तर से ही ज्ञात होता है। कोई विद्यार्थी किसी क्षेत्र में किस स्तर तक समायोजित है. वह इस बात पर निर्भर करता है कि उस क्षेत्र से सम्बन्धित विद्यार्थी विशेष की आवश्यकताएँ किस सीमा तक पूरी होती है अथवा उनके पूरी होने की सम्भावना व आशा से वह किस सीमा तक सन्तुष्ट रहता है। जय तक ये आवश्यकताएँ पूरी रहती है या इनकी पूर्ति की आशा उसे रहती है, विद्यार्थी समायोजित रहता है। इसके विपरीत अवस्था में यह अनेक तनाव एवं दयावों का शिकार बन जाता है। विद्यार्थी के व्यक्तित्व एवं व्यवहार में संवेगों

का भी प्रमुख स्थान होता है। अपने आप से समायोजित होने के लिए उसमें सवेगात्मक परिपक्वता का होना अति आवश्यक है। उचित समय पर उचित रूप से उचित संवेगों की अभिव्यक्ति विद्यार्थी के समायोजन के लिए काफी आवश्यक है। जो विद्यार्थी ऐसा नहीं कर पाते हैं, वे संवेगात्मक रूप से अस्थिर तथा तनावग्रस्त माने जाते हैं।

विद्यालय के वातावरण में भी ऐसे बहुत तस्व, विचारधाराएँ तथा कार्यक्रम व्याप्त रहते हैं, जिनका विद्यार्थियों के विकास पर नकारात्मक प्रभाव तो पड़ता ही है, साथ ही उनमें विभिन्न प्रकार की कुंठाओ, तनावों तथा अन्तर्द्वन्द्वों के पनपने की भी आधारभूमि तैयार हो जाती है। अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों के साथ किये जाने वाला अनुचित एव उपेक्षापूर्ण व्यवहार, अकारण ही उत्तेजित एवं सामान्य विखने वाली उनकी व्यवहार–चेष्टाएँ, उनके पढ़ाने की गलत एवं दिशाहीन विधियों विद्यार्थियों से उनकी बराबर बदलती हुई अपेक्षाएँ विद्यार्थियों को

स्व–अनुभूति एवं भावाभिव्यक्ति को मिलने वाले अवसरों की कमी, सहपाठियों तथा अध्यापकों की विद्यार्थियों से की जाने वाली अपेक्षाओं में विरोधाभास, पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन में सिद्धान्त और व्यवहार में दिखाई देने वाला अन्तर, विद्यालय में जो सिखाया जाता है, उसकी व्यावहारिक जीवन की सच्चाई से दूरी आदि ऐसी बहुत–सी बाते तथा परिस्थितियों का सामना विद्यार्थियों को अपने विद्यालयों में करना पड़ सकता है जिसके परिणामस्वरूप उनमें विभिन्न प्रकार के अन्तर्द्धन्द्र एवं तनाव उत्पन्न हो जाते है तथा वे अपने आपको विद्यालय में समायोजित नहीं कर पाते हैं।

विद्यार्थी का अपने आप से तथा अपने वातावरण से ठीक प्रकार समायोजन तभी सम्भव है जब वह अपने आप में इतना सशक्त और समर्थ सिद्ध हो सके कि वह असफलता, निराशा, अन्तर्द्धन्द्र तथा कुण्ठा से जुड़े हुए विभिन्न प्रकार के तनावों तथा दयावों को झेलने सम्बन्धी आवश्यक सहनशीलता का प्रदर्शन कर सके। अध्यापकों को अपने विद्यार्थियों में ऐसे सभी प्रकार के तनावी तथा दबावी को झेलने की सहन–शक्ति विकसित करने के यथासम्भव प्रयत्न करने चाहिए तथा समस्याओं का सामना करने के लिए आवश्यक सहायक तथा समझ विद्यार्थियों में विकसित की जानी चाहिए ताकि समस्याओं का सामना कर उनका उचित समाधान ढूँढ़ते हुए वे ठीक प्रकार से समायोजित रह सकें। कोशिश यहीं होनी चाहिए कि विद्यार्थी अपनी समस्याओं से अपने आप ही निपटें, परन्तु उनमें ऐसी कार्यकुशलता विकसित करने हेतु अध्यापकों द्वारा सही मार्गदर्शन करना आवश्यक होता है। इस दृष्टि से प्रत्येक विद्यालय में शैक्षणिक, व्यक्तिगत तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन एव निर्देशन की

समुचित व्यवस्था होनी चाहिए ताकि विद्यार्थियों को अपने आप से तथा अपने वातावरण के साथ समायोजित होने में आवश्यक मदद की जा सके।

संदर्भ

1. भारतीय समाज और भाषा: मिश्र, रामकुमार (**2018**). भारतीय समाज में मातृभाषा का महत्व. दिल्ली: साहित्य सागर.
2. मनोविज्ञान और भाषा: सिंह, अरविंद कुमार (**2019**). युवाओं के मानसिक विकास में मातृभाषा का योगदान. वाराणसी: काशी हिन्दू विश्वविद्यालय.
3. हिन्दी भाषा और संस्कृति: शर्मा, सुरेश (**2020**). हिन्दी और भारतीय संस्कृति. जयपुर: साहित्य मंडल.
4. शैक्षिक समाजशास्त्र: चौधरी, सीमा (**2021**). शिक्षा और सामाजिक समायोजन में भाषा का महत्व. पटना: बिहार साहित्य परिषद.
5. भाषा, शिक्षा और समाज: गुप्ता, रंजना (**2017**). भाषा और सामाजिक समायोजन. मुंबई: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय.
6. सामाजिक समायोजन: पाठक, निर्मल (**2022**). युवाओं का सामाजिक समायोजन और भाषा. दिल्ली: प्रकाशन विभाग.
7. हिन्दी और रोजगार: मेहता, सुरेश (**2019**). हिन्दी भाषा और रोजगार के अवसर. लखनऊ: उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान.
8. मनोवैज्ञानिक अध्ययन: वर्मा, अशोक (**2021**). सामाजिक समायोजन और भाषा: एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण. भोपाल: मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी.
9. समाज और संस्कृति: जैन, अनीता (**2020**). भारतीय समाज में मातृभाषा का महत्व. अहमदाबाद: साहित्य निकेतन.
10. हिन्दी और वैश्वीकरण: त्रिपाठी, रवि (**2018**). वैश्वीकरण और हिन्दी भाषा का भविष्य. दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट.
11. शैक्षिक प्रभाव: सिंह, दीपक (**2020**). शिक्षा में हिन्दी भाषा की भूमिका. वाराणसी: काशी विद्यापीठ.
12. भाषा और संचार: गुप्ता, मोहित (**2021**). हिन्दी भाषा और सामाजिक संचार. चंडीगढ़: साहित्य प्रकाशन.
13. सामाजिक अध्ययन: मिश्र, नरेश (**2019**). समाजशास्त्र और भाषा का योगदान. दिल्ली: प्रकाशन विभाग.

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

14. हिन्दी साहित्य और समाज: तिवारी, रीना (**2021**). हिन्दी साहित्य का सामाजिक प्रभाव. पटना: बिहार साहित्य परिषद.

15. भाषा और व्यक्तित्व विकास: कुमार, विकास (**2018**). भाषा और युवा व्यक्तित्व का विकास. जयपुर: राजस्थान साहित्य अकादमी.

16. हिन्दी और नई पीढ़ी: अग्रवाल, सुमन (**2022**). नई पीढ़ी में हिन्दी भाषा का प्रचलन. दिल्ली: साहित्य भारती.

17. समाजशास्त्र: चौहान, सुरभि (**2021**). भाषा और सामाजिक ढांचा. लखनऊ: साहित्य निकेतन.

18. शैक्षिक विकास: गुप्ता, नीलम (**2019**). शिक्षा और भाषा का योगदान. वाराणसी: काशी हिन्दू विश्वविद्यालय.

19. मनोविज्ञान और सामाजिक समायोजन: शर्मा, पंकज (**2020**). सामाजिक समायोजन में भाषा का मनोवैज्ञानिक प्रभाव. भोपाल: मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी.

20. समाज और भाषा: तिवारी, अनुराधा (**2018**). समाज और भाषा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. मुंबई: साहित्य निकेतन.

21. भाषा और शैक्षिक नीति: सिंह, अजय (**2022**). शिक्षा नीति और मातृभाषा हिन्दी. दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट.

22. हिन्दी और सामाजिक विज्ञान: पांडेय, मनीष (**2019**). हिन्दी और सामाजिक विज्ञान. पटना: बिहार साहित्य परिषद.

23. समाजिक समायोजन और भाषा: मिश्र, सुनील (**2020**). भाषा और सामाजिक समायोजन में हिन्दी का स्थान. जयपुर: साहित्य मंडल.

24. हिन्दी और नवयुवक: वर्मा, प्रियंका (**2021**). नवयुवकों में हिन्दी का महत्व. चंडीगढ़: साहित्य प्रकाशन.

25. शिक्षा और समाज: चौधरी, प्रीति (**2022**). समाजशास्त्र और भाषा का समायोजन. दिल्ली: प्रकाशन विभाग.

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-02, Issue-01, Sept.- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Sept-2024/02

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

महिमा और डॉ0 नवनीता भाटिया

For publication of research paper title

"युवा वर्ग के छात्रों के सामाजिक समायोजन में मातृभाषा हिन्दी का योगदान"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-01, Month September, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com